महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध पंजीयन हेतु आवेदन पत्र

विभागाध्यक्ष, ... प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय टोंक (राज.)

म.द.स. विश्वविद्यालय,
अजमेर।

विषयः– शोध पंजीयन हेतु आवेदन।

महोदय/महोदया,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि विश्वविद्यालय के परिपत्र क्रमांकः एफ–15/शोध/मदसविवि/ ~~8484~~ 69459 दिनांक ~~13-04-2017~~ 04/10/2017 में वर्णित सूचना के अनुसार मैनें निर्धारित कोर्स वर्क सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया है और इस परिपत्र के बिन्दु संख्या–1 में दिये गये निर्देशों के अनुसार शोध पंजीयन हेतु यह आवेदन निम्नांकित वांछनीयता पूरी करते हुए प्रस्तुत कर रहा हूं/रही हूं :–

1. मुझे आवंटित शोध पर्यवेक्षक डॉ. रेणु वर्मा हैं उन्होंने यह आवेदन पत्र मय दस्तावेज अग्रेषित कर दिया है।
2. आवेदन शुल्क राशि रू.500/– का डी.डी. नं. 722287 दिनांक 01.11.2017 (कुलसचिव, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के नाम)
3. अध्यादेश 124.10 में निर्धारित परिशिष्ठ–IV के अनुसार Format for outline of Proposed Research Work (6 प्रतियॉ) में वांछित शोध पर्यवेक्षक के प्रमाण पत्र, (परिशिष्ट– VI) के साथ संलग्न है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया इस आवेदन पत्र को संलग्न दस्तावेजों के साथ निदेशक शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर को शोध पंजीयन की कार्यवाही हेतु अग्रेषित करावें।

मुझे ज्ञात है कि शोध पंजीयन से शोधोपाधि प्राप्त होने की अवधि में मैं अन्य कोई उपाधि पाठ्यक्रम में प्रवेश नहीं ले सकता/सकती। यदि इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय से कोई डिप्लोमा या सर्टिफिकेट (नियमित/पार्ट टाईम/दूरस्थ शिक्षा) इस अवधि में करना चाहूंगा/चाहूंगी तो वह मैं तब ही करूंगा/करूंगी जब मुझे मेरे शोध पर्यवेक्षक यह प्रमाण पत्र दे देंगे कि इस पाठ्यक्रम को करने से शोध कार्य बाधित नहीं होगा।

संलग्न– उपर्युक्त

अनिता मीणा
प्रार्थी,

दिनांक 02/11/2017

हस्ताक्षर अनिता मीणा
पूरा नाम एवं पता अनिता मीणा, A-140, राजीव गाँधी नगर, जगतपुरा जयपुर
टेलीफोन/मोबाईल नं0 8764328997

आवंटित सेवारत शोध पर्यवेक्षक की अग्रेषण टिप्पणी

मैं, डॉ0 रेणु वर्मा इस विश्वविद्यालय का पंजीकृत शोध पर्यवेक्षक हूं। वर्तमान में राज. महाविद्यालय, टोंक में कार्यरत हूं। मेरी सेवानिवृत्ति की दिनांक 31/12/2025 है। शोध पंजीयन हेतु उक्त आवेदन पत्र मय संलग्न दस्तावेज निदेशक, शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय को कृपया अग्रेषित कराएं।

दिनांक : 2/11/17

हस्ताक्षर रेणु वर्मा
नाम डॉ. रेणु वर्मा
टेलीफोन/मोबाईल नं0 9413961936

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक [राज०]

आवंटित सेवानिवृत्त शोध पर्यवेक्षक की अग्रेषण टिप्पणी

मैं, डॉ0 .... इस विश्वविद्यालय का पंजीकृत शोध पर्यवेक्षक हूं। मैं दिनांक .... को .... से सेवानिवृत्त हो चुका हूं। उक्त अभ्यर्थी को .... विभाग / महाविद्यालय में शोध करने की अनुमति प्राप्त कर ली है, जो संलग्न है। शोध पंजीयन हेतु उक्त आवेदन पत्र मय संलग्न दस्तावेज निदेशक, शोध, म.द.स. विश्वविद्यालय को कृपया अग्रेषित कराएं।

दिनांक :

हस्ताक्षर ....
नाम ....
टेलीफोन / मोबाईल नं0 ....

क्रमांकः 2950 दिनांकः 02/11/2017

निदेशक (शोध)
म.द.स. विश्वविद्यालय, अजमेर– 305009

शोधार्थी अनिता मीणा .... का शोध पंजीयन हेतु, आवंटित शोध पर्यवेक्षक से अनुशंषित आवेदन पत्र मय संलग्न उपर्युक्त दस्तावेजों के साथ शोध पंजीयन हेतु अग्रेषित है।

2/11/17
प्राचार्य
हस्ताक्षर एवं सील, प्राचार्य / विभागाध्यक्ष
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक (राज.)

शोध अनुभाग के उपयोग हेतु

आवेदन पत्र की जांच कर ली गई है। अतः संबंधित शोध पंजीयन समिति की बैठक में निर्णयार्थ रखे जाने योग्य है

हस्ताक्षर जांच कर्ता

अथवा

आवेदन पत्र की जांच की गई और निम्न कमियां पाई गई जिनकी पूर्ति करायी जानी है :–

1.

2.

3.

आवेदन पत्र में पाई गयी उक्त कमियां अभ्यर्थी द्वारा दिनांक .... को पूरी कर दी गयी है। अतः संबंधित विषय शोध समिति की बैठक में निर्णयार्थ रखे जाने योग्य है।

हस्ताक्षर जांच कर्ता

APPENDIX-IV

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY
AJMER

Format for Outline of Proposed Research work
(to be supplied in Six copies)

1. Name of Scholar (In English) **Anita Meena**

(In Hindi) अनिता मीणा

2. Title of the Research Work :

(In English) **Rameshchandra Shah Novel Literature : Contemporary Context**

(In Hindi) रमेशचन्द्र शाह का उपन्यास साहित्य : समसामयिक संदर्भ

3. Location

A. Institution/Deparment where the work is to be done

Department of Hindi Govt. College, Tonk (Raj.)

B. Geographical area of Investigation, if Any. - Nil

4- Interoduction, Importance of Proposed Investgation Objectives

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचयात्मक महत्व एवं उद्देश्य

हिन्दी साहित्य को नवीन दृष्टि एवं दिशा प्रदान कर युगान्तर प्रस्तुत करने वाले डॉ. रमेशचन्द्र शाह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार हैं। डॉ. शाह साहित्य के एक ऐसे सर्जक रहे हैं, जिन्होंने उपन्यास, कहानी, काव्य, निबन्ध, नाटक व आलोचना आदि सभी विधाओं पर समान अधिकार के साथ अपनी लेखनी चलाई। डॉ. शाह मूलतः उपन्यासकार हैं।

डॉ. शाह का लेखन अपने देश काल की दशा एवं दिशा से गहरे रूप से संबद्ध हैं, जिसमें समकालीन यथार्थ का गहरी संवेदनशीलता के साथ चित्रण हुआ है। उन्होंने अपना लेखन उस दौर में शुरू किया, जब सठोतरी कहानी, आन्दोलन अपने पैरों पर खड़ा होने लगा था। यह दौर मोहभंग का था, जो स्वतन्त्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। मानव तनावों, विसंगतियों एवं कुण्ठाओं में जी रहा था। घिनौनी व्यवस्था के प्रति चारों तरफ आक्रोश दिखलाई दे रहा था। डॉ. शाह ने समसामयिक परिदृश्य को चित्रित किया।

डॉ. शाह इस घोर मोहभंग के उस दौर में भी अपने समकालीनों के बीच एक ऐसे रचनाकार के रूप में अपनी पहचान बना रहे थे, जो वृहत्तर सामाजिक संदर्भों से जुड़ने की आकांक्षा रखते थे। मलयज के शब्दों में ''साहित्य के सवालों को शाह जी साहित्य में उगा कर साहित्य में ही नहीं काट लेते। उनके लिए ये सवाल मानव–संस्कृति के भी सवाल है। शाह अपने साहित्य विमर्श में किसी रचना का तार छूते हैं और उससे उत्पन्न झंकृति

मानव–नियति और मानव अस्मिता के क्षितिजों–सीमांतों तक एक सघन और सजीव स्पर्श की सी थरथराहट लिए हुए दौड़ जाती है। उनका साहित्य चिंतन इतिहास, संस्कृति और परम्परा का एक भरा–पूरा आर्केस्ट्रा है। सिर्फ साहित्य या कला की दुबली, एकल तान नहीं। शाह ने अपना साहित्य–विवेक, संस्कृति–मंथन की अपेक्षाकृत गहन–जटिल किंतु अनिवार्य प्रक्रिया में से गुजर कर अर्जित किया है।'' अनुभवों की सच्चाई और संवेदनशीलता डॉ. शाह की रचनाओं की प्रमुख विशेषता है। लेखन उनका व्यवसाय नहीं अपितु अनुभूति की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

'साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है।' डॉ. शाह ने भी अपने उपन्यासों में समसामयिक संदर्भों को जाना, उन्हें भोगा और अपने आस–पास में घट रही घटनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने की कोशिश की। उनके उपन्यास अनुभव की ऊँचाई से निकलकर जीवन की ठोस समतल भूमि पर निर्मल जल की भाँति प्रवाहमान है। उनके उपन्यास जीवन के मर्मभरे समसामयिक यथार्थ को उजागर करते हैं, वे लिखते हैं–

एक गरीब मोहल्ला
सार्वजनिक नल के नीचे,
रात–भर ठिठुरते
खाली बरतन
जाने कितने सूर्योदय
उनमें डबडबाते,

डॉ. शाह आत्ममुग्धता के नहीं, आत्मविश्लेषण के कथाकार हैं। उन्होंने कोई भी रचना भावुक होकर नहीं लिखी। सृजन के आंतरिक क्षण में भी उनका जागरूक मानस हमेशा क्रियाशील रहा है। चिंतन, मंथन और आत्मविश्लेषण उनकी सृजन–प्रक्रिया के अनिवार्य अंग रहे हैं। यही कारण है कि उनका अधिकतर कथा–साहित्य आत्म–कथात्मक है।

डॉ. शाह का पहला उपन्यास 'गोबर गणेश' एक विशिष्ट औपन्यासिक कृति है जो मध्यवर्गीय आकांक्षाओं और सपनों के बनने और बिगड़ने की कहानी कहती है। गोपाल राय के अनुसार– ''पूरा औपन्यासिक संसार एक पात्र 'विनायक' की चेतना में घटित होता है, यह उनके जिए हुए, भोगे हुए कल की गाथा है।

समकालीन समय में भारत में अनेक विमर्श चल रहे हैं जैसे– स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, दिव्यांग विमर्श आदिवासी विमर्श आदि। इनमें से दलित विमर्श को आधार बनाकर डॉ. शाह ने 'किस्सा गुलाम' उपन्यास लिखा। जो ऐसे व्यक्ति की गाथा है जो पिछड़ी जाति में पैदा होने की हीन–भावना से आजीवन द्वन्द्व ग्रस्त रहा। समकालीन उपन्यास जगत में संवेदना और संबंधों के स्तर पर जो महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है उसकी अनुगूँज 'किस्सा गुलाम' में सुनाई देती है।

वर्तमान में आतंकवाद भारत की एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है जिसके कारण जनमानस दहशत में जी रहा है। डॉ. शाह ने आतंकवाद की समस्या को अपने उपन्यास 'आखिरी दिन' में उठाया है। यह उपन्यास कश्मीरी आतंकवाद की घटनाओं एवं मानवीय अत्याचारों पर आधारित है। साम्प्रदायिकता को सर्वाधिक बढ़ावा हमारे राजनीतिक दल दे रहे हैं, जो स्वार्थसिद्धि के लिए आम नागरिकों को नुकसान पहुँचा रहे हैं। इस राजनीति ने हमारी शिक्षा व्यवस्था को भी नहीं छोड़ा। स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालय तक इसकी चपेट में आ गए हैं। डॉ. शाह 'पुनर्वास' में विश्वविद्यालयीन राजनीति का पर्दाफाश करते हुए समकालीन राजनीतिक स्थिति और शिक्षा व्यवस्था पर कुठाराघात किया है।

डॉ. शाह हमारे समय के अहम व अद्वितीय साँस्कृतिक मूल्यान्वेषी साहित्यकार है। वे परम्पराओं और संस्कारों की पुनःस्थापना करना चाहते हैं। समकालीन समय में व्यक्ति पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का अंधानुकरण कर

रहा है। 'विनायक' उपन्यास इसी परिप्रेक्ष्य में लिखा गया है, जिसमें एक कलयुगी चरित्र को पौराणिक एवं महाकाव्यात्मक परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश की गई है।

समकालीन परिवेश में परिवार रूपी संस्था हर दिए नए आघातों से होकर गुजर रही है और अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। डॉ. शाह के उपन्यासों में स्वतंत्र्योत्तर भारतीय परिवार में जो समस्याएँ उभर रही है, चाहे वे दाम्पत्य संबंधों की समस्या हो, चाहे संयुक्त परिवार की या फिर परिवार के विघटन से बच्चों की समस्या हो या वृद्ध लोगों की समस्या हो, सबका गहरी संवेदनशीलता के साथ चित्रण हुआ है। 'सफेद परदे पर' में डॉ. शाह ने सभी समकालीन समस्याओं को अभिव्यक्त किया है।

डॉ. शाह के उपन्यासों का स्वरूप समय और सत्य के अनुरूप बदलता रहा है। उनका कहना है– कि हर दशक की कहानी और उपन्यास का रूप बदलता है। ऐसे में हर उपन्यास–कहानी में हम एक नई समस्या से जूझते हैं, नई बाधाओं से पार पाते हैं, अभिव्यक्ति की एक नई और अलग ही चुनौती का सामना करते हैं। उनके उपन्यासों में बुद्धि, विचार, अनुभूमि और कल्पना की अद्भुत समानुपातिक अन्विति देखने को मिलती है।

डॉ. शाह ने समसामयिक चेतना को समकालीन परिवेश के साथ आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित किया है। डॉ. शाह ने बुनियादी सोच और संवेदना को आधुनिकतावादी परिवेश में यथार्थ रूप से चित्रित किया है। उनके सभी उपन्यास सामाजिक विषयों से सरोकार रखते हैं, वे कभी उच्च और निम्न वर्ग में बढ़ते अन्तर, आर्थिक बदलावों से मध्यवर्ग की बढ़ती समस्याएँ, 21वीं सदी में भी आतंकवाद का भय, साम्प्रदायिक दंगों के कारण जनता की अनकहीं पीड़ा का विस्तार, यौन सम्बन्धों, नारी समस्याओं, युवा मानसिकता तथा आन्तरिक अन्तर्द्वन्दों आदि विषयों को केन्द्र में रखकर अपना

रचनाकर्म करते हैं। इन सभी समस्याओं को समसामयिक दृष्टिकोण से देखना मेरे शोध विषय का उद्‌देश्य रहेगा।

प्रस्तावित शोध में इस पर विचार करना अपेक्षित है कि डॉ. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में समसामयिक संदर्भों का कैसा चित्रण हुआ है? यह चित्रण अन्य समकालीन उपन्यासकारों से किन अर्थों में भिन्न है? किन–किन समसामयिक समस्याओं को छुआ गया है? उनके कारण कौन से हैं? क्या उनका उन्होंने कोई समाधान दिया है?

प्रस्तावित शोध के उद्‌देश्य :

1. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में जीवन की विकासोन्मुख परिस्थितियों का सूक्ष्म अवलोकन करते हुए मानवीय संस्कृति का यथार्थ निरूपण का अध्ययन करना।
2. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में चित्रित भारतीय समाज की विषमताओं तथा समस्याओं का युगीन परिस्थितियों में अध्ययन करना।
3. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनुष्य की निराशा, कुण्ठा, सन्त्रास एवं अन्तर्द्वन्दों को स्पष्ट करना।
4. मानव जगत की सच्चाईयों का मार्मिक आंकलन करते हुए जीवन के समसामयिक संदर्भों पर गंभीरता से अवगाहन करने का सफल प्रयास करना।
5. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में चित्रित आतंकवाद की अवधारणा व स्वरूप को स्पष्ट करना।
6. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में वर्णित मानवीय संवेदना, अनुभूति व गंभीर चिंतन को जनमानस तक पहुँचाना।
7. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में वर्णित युवा पीढ़ी की बदलती मानसिकता को दर्शाना।

8. रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में समसामयिक समस्याओं का अध्ययन करना।
9. भारतीय संस्कृति और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में चित्रित विचारों को स्पष्ट करना।
10. पीढ़ियों के मध्य वैचारिक मतभेद को स्पष्ट करना।
11. भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति के अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट करना।

5- Review (Work Already Done on the Subject of Proposed Research Study)

शोध से संबद्ध साहित्य का सिंहावलोकन

समसामयिक संदर्भों पर विभिन्न लेखकों व लेखिकाओं ने शोध कार्य किए हैं। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध विषय 'रमेशचन्द्र शाह का उपन्यास साहित्य : समसामयिक संदर्भ' के चयन के दौरान निम्नलिखित साहित्य ने अपनी सीमाओं के साथ शोधार्थी का ध्यान आकर्षित किया :

1. **यादव, सुरेन्द्र कुमार, (2001) –** ''नागार्जुन के उपन्यासः समसामयिक संदर्भ'' नामक शोध प्रबंध को छः अध्याय में विभाजित किया गया है, जिसमें नागार्जन का व्यक्तित्व और कृतित्व, समसामयिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक यथार्थ का विवेचन करते हुए, नागार्जुन के उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण समाज तथा समसामयिक साहित्यिक संदर्भों के प्रति नागार्जुन का दृष्टिकोण आदि पर विस्तार से चर्चा की गई है।

2. **पुजारा, स्वीटी सी., (2016) –** ''शिवानी के उपन्यासों में समसामयिक समस्याएँ'' नामक शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है, जिसमें शिवानी के व्यक्तित्व व कृतित्व एवं समसामयिकता का अर्थ एवं स्वरूप की चर्चा की गई है। शिवानी के उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ–पारिवारिक, पर्दा–प्रथा एवं नारी, वृद्धजनों की समस्या, वैवाहिक समस्याएँ, धार्मिक समस्याएँ, बेरोजगारी, छुआछूत तथा समाज में नारी की समस्याएँ आदि समसामयिक समस्याओं को उजागर किया गया है।

3. **समाधिया, अनिल कुमार , (1997) –** ''मोहन राकेश के साहित्य में समसामयिक चेतना'' नामक शोध प्रबंध को पाँच शोध अध्यायों में निरूपित किया गया है, जिसमें मोहन राकेश के समग्र साहित्य का विवरण देते हुए, मानव मूल्य, व्यक्ति चेतना, वर्ग चेतना, समकालीन संवेदना, पारिवारिक व सामाजिक मूल्यों में बदलाव, संबंधहीनता व साहित्य में समसामयिक युगीन चेतना के यथार्थवादी स्वरूप को व्यंजित किया गया है।

4. **झाला, हर्षा आर. (2014) –** ''शैलेश मटियानी के उपन्यासों में समसामयिकता'' नामक शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभक्त है, जिसमें शैलेश मटियानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ हिन्दी उपन्यासों में उनके स्थान को सुनिश्चित किया गया है। समसामयिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं साँस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वर्ग व्यवस्था, वैवाहिक जीवन, आर्थिक विषमता, राजनीतिक विचारधारा एवं धार्मिक मान्यताओं को दर्शाया गया है।

5. **सरवैया, अरविंद एन. (2014) –** ''श्रीलाल शुक्ल के साहित्य में समसामयिकता'' नामक शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है, जिसमें श्रीलाल शुक्ल के साहित्य में निहित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं साँस्कृतिक चेतना को निरूपित किया गया है। उनके साहित्य में सहज, स्वाभाविक जीवन्त पात्र सृष्टि को प्रस्तुत किया गया है।

6. **सौलंकी, धर्मेश डी. (2014) –** ''अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में समसामयिकता'' नामक शोध प्रबंध पाँच शोध अध्यायों में विभक्त है, जिसमें अभिमन्यु अनत का वैयक्तिक परिचय और रचनाधार्मिता का उल्लेख करते हुए, भारतेत्तर देशों में लिखा जाने वाला हिन्दी साहित्य तथा अभिमन्यु अनत के उपन्यासों का विवरण दिया गया है।

समसामयिकता के मूलस्रोत एवं स्वरूप को तथा संवेदना और शिल्प के संदर्भ में चर्चा की गई है।

7. **जोधानी, विपुल रणछोड़ भाई, (2010) –** ''डॉ. महेन्द्र भट्‌टनागर के काव्य में समसामयिकता'' नाम शोध प्रबंध में डॉ. महेन्द्र भट्‌टनागर का जीवन और साहित्य के प्रति दृष्टिकोण, साहित्य और समाज को देखने का नजरिया, सामाजिक अंध–विश्वासों और साम्प्रदायिक सौहाद्र को व्यापक ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है।

8. **मुदिराज, शशि (2011) –** ''डॉ. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामयिक यथार्थबोध'' नामक शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है जिसमें समसामयिकता और आधुनिकता पर विचार करते हुए वर्गीय पृष्ठभूमि और आर्थिक संदर्भ में, भारतीय समाज पर औद्योगिक क्रांति का प्रभाव, समसामयिक समस्याओं, नारी समस्या आदि पर विस्तार से चर्चा की गई है।

9. **डॉ. त्रिपाठी, सत्यदेव (2000) –** ''हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श'' नामक शोध प्रबंध में समकालीन उपन्यासों में विभिन्न विमर्श जैसे– दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, दिव्यांग विमर्श, आदि पर प्रकाश डाला गया है।

10. **चन्द्रशेखर (1982) –** ''आधुनिकता बनाम समकालीनता'' नामक शोध प्रबंध में आधुनिकता एवं समकालीनता को स्पष्ट करते हुए, इस पर विभिन्न विद्वानों के अलग–अलग मतों को स्पष्ट किया गया है। आधुनिकता और समकालीनता बोध एक–दूसरे से जुड़े होकर भी अन्तर रखते हैं, ऐसी स्थिति में दोनों के अन्तर निर्धारक बिन्दुओं को समझाया गया है।

11. **मिश्रा, माला –** ''यशपाल के उपन्यासों में समसामयिक समस्याएँ: एक अध्ययन''– नामक शोध प्रबंध में समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक,

राजनीतिक, धार्मिक व साँस्कृतिक समस्याओं का समसामयिक संदर्भों में अध्ययन किया गया है।

12. **जोशी, ज्योतिष, (2010) –** ''उपन्यास की समकालीनता'' नामक शोध प्रबंध में समाकलीन उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ, मानव मूल्यों तथा सामाजिक अन्तर्द्वन्दों को मनोवैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किया गया है।

13. **जोशी, बिनाबेन जे., (2010) –** ''डॉ. मनमोहन सहगल के उपन्यासों में समसामयिकता'' नामक शोध प्रबंध में समसामयिकता के पहलुओं पर चर्चा करते हुए, नारी को समाज में किन–किन समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है का उल्लेख हुआ है।

14. **डॉ. मोहन नरेन्द्र, (1967) –** ''आधुनिकता और समकालीन रचना संदर्भ'' नामक शोध प्रबंध में आधुनिकता और समकालीनता में अन्तर को स्पष्ट करते हुए समकालीन रचना विधान, रचनाओं में समकालीन यथार्थ आदि पहलुओं को स्पष्ट किया गया है।

15. **डॉ. मिश्रा, मनोरमा, (2007) –** ''मिथकीय चेतना : समकालीन संदर्भ'' नामक शोध प्रबंध में मिथकीय चेतना से संबंधित साहित्य का समकालीनता के आधार पर अध्ययन करते हुए मिथकीय साहित्य की वर्तमान में प्रासंगिकता को दर्शाया गया है।

16. **कल्याणी, नरसिंह राव, (1996) –** ''डॉ. प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में समसामयिक यथार्थबोध'' नामक शोध प्रबंध में प्रभाकर माचवे के उपन्यासों में स्थित समसामयिक सामाजिक, साँस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया गया है।

17. **जोशी, राजेश (2010) –** ''समकालीनता और साहित्य'' नामक शोध प्रबंध में समकालीन संदर्भों के आधार पर साहित्य के स्वरूप व मूल संवेदना को प्रस्तुत किया गया है।

6- Research Gaps Identified in the Proposed Field of Investigation (Besed on the review)

अनुसंधान के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध कार्य की अनुपलब्धता

रमेशचन्द्र शाह का व्यक्तित्व जितना विराट है, उनका रचना–संसार उतना ही विस्तृत। साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंनें लेखनी चलाई है। उनके रचना संसार में विविधता और बहुरूपता के साथ–साथ सामाजिक, साँस्कृतिक और राजनीतिक तत्व घुले–मिले हैं। अतः इस विराट व्यक्तित्व पर शोध की सीमा समाप्त नहीं हुई है, अपार संभावनाएँ हैं। उन्हीं में से मेरा भी एक प्रस्तावित शोध विषय है– **''रमेशचन्द्र शाह का उपन्यास साहित्य : समसामयिक संदर्भ''**

मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध–प्रबंध का विषय अब तक नितांत अछूता है, क्योंकि मेरा शोध कार्य भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों की विस्तृत व्याख्या को समसामयिक संदर्भों में समाधान के रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखता है, जो परिवार, समाज और देश के प्रति मानव को दायित्वों का बोध करवाता है और सत्यं, शिवं, सुन्दरं की स्थापना करता है। अतः इस पर किया गया कार्य पूर्णतः भिन्न तथा नवीन होगा। मेरे शोध प्रस्ताव में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में चित्रित समसामयिक संदर्भों का विभिन्न आयामों के द्वारा अध्ययन अपेक्षित है।

रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास साहित्य से संबंधित जो शोध कार्य हुए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार उनकी सूची इस प्रकार है।

1. **कुमार, नरेन्द्र –** ''रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का साँस्कृतिक अध्ययनः एक विश्लेषण'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का

साँस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है। उनके उपन्यासों में चित्रित विभिन्न संस्कृतियों का अवलोकन किया गया है।

2. **सुनीता** – ''रमेशचन्द्र शाह औपन्यासिक कृतित्वः एक अनुशीलन'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का सामान्य अध्ययन करते हुए उपन्यासों में स्थित मूल संवेदना का अध्ययन किया गया है।

3. **श्रीवास्तव, भूमिका** – ''रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का शैलीगत अध्ययन'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का विभिन्न शैलियों के आधार पर वैज्ञानिक पद्धत्ति से अध्ययन किया गया है।

4. **कुसुमलता** – ''रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं साँस्कृतिक चेतना'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में चित्रित समाज एवं संस्कृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

5. **राय, सरीता** – ''रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में लेखकीय दायित्व चेतना का स्तर'' नामक शोध प्रबंध में यह स्पष्ट किया गया है कि लेखन कार्य करते समय लेखक को किन दायित्वों का ध्यान रखना चाहिए। लेखन का विषय समाजोपयोगी होना चाहिए।

6. **सोनी, गोपाल (2010)** ''डॉ. रमेशचन्द्र शाह तथा पंकज विष्ट के उपन्यासों में साँस्कृतिक संदर्भः एक तुलना'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह तथा पंकज विष्ट के उपन्यासों में चित्रित कुमाऊँ संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

7. **श्रीमती जोशी, माया (1996)**– ''रमेशचन्द्र शाह और उनका रचना संसार'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के सम्पूर्ण साहित्य का मनोवैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया गया है।

8. **चौहान, अनुपमा (2009)** ''रमेशचन्द्र शाह का गद्य विमर्श'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह को गद्य की विधाओं की रचना करने में किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ा आदि को प्रस्तुत किया गया है।

9. **भुसारी, राजेश जयराम (2001)** ''रमेशचन्द्र शाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के विराट व्यक्तित्व व सम्पूर्ण कृतित्व का विस्तृत विवेचन किया गया है।

10. **मिश्रा, रश्मि –** ''उपन्यासकार रमेशचन्द्र शाह संवेदना और शिल्प'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में मूल संवेदना और उसकी शिल्पगत व्याख्या की गई है।

11. **पुंडेर, पूजा –** ''रमेशचन्द्र शाह के कथा–साहित्य का सामाजिक अनुशीलन'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्गों की समाजशास्त्रीय आधार पर व्याख्या की गई है।

12. **पाण्डे, शोभाना (2008)** ''रमेशचन्द्र शाह का कथा–साहित्यः एक अनुशीलन'' नामक शोध प्रबंध में रमेशचन्द्र शाह के सम्पूर्ण कथा–साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया गया है।

7- Major Hypothesics, if any

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध प्रारूप रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों को केन्द्र में रखकर बनाया गया है। डॉ. शाह के उपन्यास सामाजिक परिवेश से उनकी संलग्नता की सहज परिणति है, जो उनके जीवन के कटु–तिक्त अनुभवों तथा समसामयिक यथार्थ जीवन को घोषित करता है।

प्रस्तुत शोध को अध्ययन एवं अनुसंधान की दृष्टि से कुल छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक है– 'रमेशचन्द्र शाह का जीवन एवं व्यक्तित्व' जिसके अन्तर्गत डॉ. शाह का जीवनवृत, शिक्षा–दीक्षा, पारिवारिक स्थिति, रचनाकर्म के प्रेरणा स्रोत एवं व्यक्तित्व पर विचार किया जाएगा तथा सम्पूर्ण कथा साहित्य का विवेचन होगा। द्वितीय अध्याय का शीर्षक है– 'साठोतरी उपन्यास परम्परा और रमेशचन्द्र शाह' जिसमें साठोतरी उपन्यास का प्रारम्भ, स्वरूप और इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए, हिन्दी उपन्यासों में समसामयिक संदर्भों की चर्चा की जाएगी। साठोतरी दौर में कौन–कौन सी समसामयिक समस्याएँ थीं और डॉ. शाह ने किन–किन समसामयिक समस्याओं को लेकर अपने उपन्यासों की सृष्टि की है और उनके उपन्यासों की क्या विशेषताएँ हैं इस पर गहराई से विवेचन–विश्लेषण किया जाएगा।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है– 'समसामयिक यथार्थ और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास' जिसमें समसामयिकता शब्द की व्युत्पत्ति, संज्ञा एवं अर्थ विस्तार के साथ विभिन्न कोशों तथा विद्वानों के विधानों के आधार से समसामयिकता के स्वरूप को स्पष्ट किया जाएगा। समसामयिकता के विविध आयाम के

अन्तर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं साँस्कृतिक पहलुओं पर विचार करते हुए डॉ. शाह का इन पहलुओं पर दृष्टिकोण को स्पष्ट किया जाएगा। चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है– 'समसामयिक भारतीय समाज और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास' जिसमें समसामयिक भारतीय समाज की परम्पराओं व जीवन मूल्यों को उजागर किया जाएगा, ग्रामीण व नगरीय समाज के समसामयिकता के समानता–असमानता के पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। आधुनिक समाज में स्त्री–पुरूषों संबंधों में आ रहे बदलावों के कारणों का पता लगा कर उनका निराकरण करने की कोशिश की जाएगी। वर्तमान समय में हमारे सामाजिक मूल्यों का ह्यास होता जा रहा है, इन सामाजिक मूल्यों को किस प्रकार ह्यास होने से बचाया जा सकता है इसका उपाय खोजने की कोशिश की जाएगी।

पंचम अध्याय का शीर्षक है– 'समसामयिक साँस्कृतिक संदर्भ और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास' जिसमें समसामयिक परिवार व्यवस्था और लोकव्यवहार, शिक्षा व्यवस्था, युवा पीढ़ी के स्वपन, समसामयिकता पर वैज्ञानिक एवं यांत्रिकता का प्रभाव आदि पर विस्तार से चर्चा करते हुए, भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति के अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट किया जाएगा। षष्ठ अध्याय का शीर्षक है– 'रमेशचन्द्र शाह का रचना विधान' जिसमें डॉ. शाह के उपन्यासों का शिल्प, पात्रों की सृष्टि एवं भाषा शैली पर विचार किया जाएगा।

8- Rescarch Method/Technique

(शोध पद्धति / तकनीक)

प्रस्तावित शोध कार्य समकालीन प्रसिद्ध रचनाकार ''रमेशचन्द्र शाह का उपन्यास साहित्यः समसामयिक संदर्भ'' पर आधारित है। साहित्य में चित्रित समसामयिक संदर्भों को उकेरने के लिए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक साँस्कृतिक भूमि पर होने वाली समस्त घटनाक्रमों तथा रचनाकार एवं पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्दों व मनोदशा का अध्ययन करने के लिए सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पद्धत्ति का सहारा लिया जाता है। एक शोधक की दृष्टि से मेरा उद्‌देश्य रमेशचन्द्र शाह के सम्पूर्ण उपन्यासों में चित्रित समसामयिक संदर्भों को जनमानस तक पहुँचाना रहेगा।

1. शोध विषय हेतु रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का संकलन किया जाएगा।
2. शोध विषय से संबंधित पूर्ववर्ती शोधकों के ग्रंथों से सूचनाएँ प्राप्त की जाएगी।
3. शोध विषय से संबंधित संदर्भ ग्रंथों से सामग्री संकलित की जाएगी।
4. पूर्ववर्ती शोधकों एवं विषय विशेषज्ञों से परामर्श एवं सूचनाएँ प्राप्त की जाएगी।
5. पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विभिन्न लेखों, साक्षात्कार एवं पत्राचार के द्वारा आवश्यक सामग्री जुटाई जाएगी।
6. विभिन्न प्रकाशनों से प्रकाशित प्रस्तावित शोध संबंधी सामग्री का संकलन किया जाएगा।
7. इंटरनेट के जरिए विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त की जाएगी।
8. साक्षात्कार लेना।

9. अनुसूची बनाना।

10. प्रश्नावली तैयार करना।

11. छाया चित्रों पर संकलन।

Tentative Chapterization

(प्रस्तावित अध्याय)

भूमिका

विषय चयन

विषय का महत्व

विषय के प्रेरक तत्व

विषय की प्रासंगिकता

समसामयिक : अर्थ विश्लेषण

प्रथम अध्याय : रमेशचन्द्र शाह का जीवन एवं व्यक्तित्व

1.1 : रमेशचन्द्र शाह की विचारधारा एवं जीवन दृष्टि

1.2 : रमेशचन्द्र शाह के कथा साहित्य का विवेचन

द्वितीय अध्याय : साठोत्तरी उपन्यास परम्परा और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास

2.1 : साठोत्तरी उपन्यास परम्पराः इतिहास दृष्टि

2.2 : समसामयिक संदर्भों में उपन्यासों की भूमिका

2.3 : रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का वैशिष्ट्य

तृतीय अध्याय : समसामयिक यथार्थ और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास

3.1 : समसामयिक यथार्थ की अवधारणा

3.2 : समसामयिक यथार्थ का बदलता स्वरूप और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास

3.3 : समसामयिक राजनीतिक यथार्थ के संदर्भ

3.4 : सामाजिक–आर्थिक समस्याएँ और रमेशचन्द्र शाह का

दृष्टिकोण

चतुर्थ अध्याय : समसामयिक भारतीय समाज और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास

4.1 : समसामयिक भारतीय समाज की परम्परा और जीवन मूल्य

4.2 : ग्रामीण और नगरीय समाज के समसामयिक संदर्भ

4.3 : स्त्री–पुरूष संबंधों के बदलते प्रतिमान

4.4 : सामाजिक मूल्यों का संक्रमण

4.5 समसामयिक सामाजिक जीवन के यथार्थ

पंचम अध्याय : समसामयिक साँस्कृतिक संदर्भ और रमेशचन्द्र शाह के उपन्यास

5.1 : समसामयिक परिवार व्यवस्था और लोक व्यवहार

5.2 : समसामयिक शिक्षा व्यवस्था और लोक व्यवहार

5.3 : समसामयिक युवा पीढ़ी के स्वप्न एवं यथार्थ

5.4 : समसामयिकता पर वैज्ञानिक एवं यांत्रिक युग का प्रभाव

5.5 : भारतीय संस्कृति एवं पाश्चात्य संस्कृति का अन्तर्द्वन्द्व

षष्ठ अध्याय : रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का रचना विधान

6.1 : रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों का शिल्प विधान

6.2 : रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों में पात्रों की सृष्टि

6.3 : रमेशचन्द्र शाह के उपन्यासों की भाषा शैली

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

9- Primary Sources Proposed to be used for this Research

(प्रस्तुत शोध की प्रस्तावित आधारभूत सामग्री)

क्र. सं.	लेखक	उपन्यास का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
1	रमेशचन्द्र शाह	गोबर गणेश	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1978
2	रमेशचन्द्र शाह	किस्सा गुलाम	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1986
3	रमेशचन्द्र शाह	पूर्वापर	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1990
4	रमेशचन्द्र शाह	आखिरी दिन	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1992
5	रमेशचन्द्र शाह	पुनर्वास	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	1995
6	रमेशचन्द्र शाह	आप कहीं नहीं रहते विभूति बाबू	वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर	2001
7	रमेशचन्द्र शाह	सफेद परदे पर	किताब घर, दिल्ली	2006
8	रमेशचन्द्र शाह	कम्बख्त इस मोड़ पर	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2007
9	रमेशचन्द्र शाह	विनायक	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	2010
10	रमेशचन्द्र शाह	असबाब–ए–विरानी	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2011
11	रमेशचन्द्र शाह	कथा सनातन	राजपाल एण्ड संज, दिल्ली	2012

Selected Bibliography :

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. राणा, मंजुला : दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिक सौहार्द, वाणी प्रकाश, नई दिल्ली, 2008

2. डॉ. प्रसाद, द्वारिका : हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार विश्व भारतीय पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004

3. डॉ. महाजन, संजीव : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2004

4. डॉ. शर्मा, रेणुका : हिन्दी लघु उपन्यासों में चित्रित महानगरीय सभ्यता अभिनव प्रकाशन, अजमेर, 2010

5. डॉ. सहस्त्रबद्धे, विमल : हिन्दी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, पुस्तक संस्थान, कानपुर, 1974

6. डॉ. श्रीमाली, इन्द्रप्रकाश : समकालीन हिन्दी उपन्यासों में प्रेम अंकुर प्रकाशन, उदयपुर, 2010

7. डॉ. नागेरी, कान्ता : आधुनिक भारत का सामाजिक साँस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2007

8. पानेरी, हेमेन्द्र कुमार : स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण, संघी प्रकाशन, जयपुर, 1984

9. दोषी, एस.एल., आधुनिकता : उत्तर आधुनिकता तथा नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत
राव पब्लिकेशन, जयपुर, द्वितीय संस्करण, 2005

10. डॉ. जैन, रजनीकांत : अठवें दशक के हिन्दी उपन्यास
दिग्दर्शन चरण जैन, नई दिल्ली, 1997

11. श्रीवास्तव, परमानंद : उपन्यास का पुनर्जन्म
वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1995

12. डॉ. शर्मा, कुसुम : साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : विविध प्रयोग, श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1990

13. डॉ. लाल, डाली : समकालीन हिन्दी उपन्यास
साहित्य वाणी, इलाहबाद, 1989

14. डॉ. रत्नाकार, मोहनलाल : हिन्दी उपन्यास : द्वन्द्व एवं संघर्ष, प्रकाशन विभाग, दिल्ली, 1993

15. डॉ. आजमानी, सुकृता, : प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासों में बालमनोविज्ञान
पराग प्रकाशन, दिल्ली, 1990

16. डॉ. गोयनका,कमल किशोर : प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प–विधान, सरस्वती प्रेस, नई दिल्ली, 1994

17. डॉ. अग्रवाल, भारत भूषण : हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव, ऋषभचरण जैन एण्ड सन्तति प्रकाशन, दिल्ली, 2001

18. डॉ. शर्मा, सोहन : भारतीय समाज में वर्ग–संघर्ष रचनात्मक
लेखन एवं प्रकाशन केन्द्र, कानपुर, 1998

19. डॉ. प्रसाद, शंकर : सामाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान
अनुपम प्रकाशन, पटना, 1978

20. प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य,
हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, 1954

21. डॉ. देसाई, पारूकान्त : हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास
चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 2002

22. डॉ. मदान, इन्द्रनाथ : हिन्दी उपन्यास एक नई दृष्टि
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975

23. डॉ. मेहता, आशा : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में वैचारिकता
भारतीय ग्रंथ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988

24. डॉ. सिंह, कुमार पाल : हिन्दी उपन्यास : सामाजिक चेतना
पांडुलिपी प्रकाशन, दिल्ली, 1976

25. डॉ. लोखंडे, अरूणा : समकालीन कथा साहित्य में जनचेतना
विकास प्रकाशन, कानपुर, 1996

26. डॉ. त्रिभुवन सिंह : हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, 1973

27. सिरमार, बलराज : मानव मूल्य और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, खाया पब्लिशर्स, दिल्ली, 2002

28. डॉ. शर्मा, माखनलाल : हिन्दी उपन्यास सिद्धान्त और समीक्षा
प्रभात, प्रकाशन, दिल्ली, 1966

29. मधुरेश : हिन्दी उपन्यास सार्थक की पहचान
स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, 2002

30. डॉ. शर्मा, प्रदीप कुमार : हिन्दी उपन्यासों का शिल्प–विधान
अक्षय प्रकाशन, कानपुर, 1990

31. डॉ. राय, गोपाल : हिन्दी उपन्यास का इतिहास
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

32. मेघवाल, कुसुम : हिन्दी उपन्यासों में दलित वर्ग
संघी प्रकाशन, जयपुर, 1987

33. डॉ. पांडे, इन्दुप्रकाश : हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में जीवन
सत्य, नेशनल पब्लिकशिंग हाऊस, दिल्ली

34. डॉ. गंभीर, एस. : साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक
चेतना, विद्या विहार, कानपुर, 1972

35. डॉ. मानधाने, धनराज : हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास
ग्रंथम प्रकाशन, कानपुर, 1972

36. कृष्णकान्त, सुमन : इक्कीसवीं सदी की ओर
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001

37. डॉ. गुप्ता, सुषमारानी : हिन्दी उपन्यासों में महाकाव्यात्मक चेतना
सूर्य प्रकाशन, दिल्ली, 1983

38. डॉ. राठौर, अरूणेन्द्र सिंह : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युग
चेतना, जागृति प्रकाशन, कानपुर, 2009

39. डॉ. वर्मा, शीतप्रभा : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में
बदलते सामाजिक संदर्भ
विद्या विहार, कानपुर, 1987

40. डॉ. मोहन, नरेन्द्र : आधुनिक हिन्दी उपन्यास
दि मैकमिलन कंपनी, दिल्ली, 1975

41. डॉ. अंसल, कुसुम : आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में महानगर
अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली, 1993

42. डॉ. गुप्ता, ज्ञानचन्द्र : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम
चेतना, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, 1974

43. डॉ. राय विवेकी : आधुनिक उपन्यास विविध आयाम
अनिल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1990

44. डॉ. वर्मा, प्रभा : हिन्दी उपन्यासः सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया और स्वरूप क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, 1990

45. भूपेन्द्र, भूपसिंह : मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी उपन्यास श्याम प्रकाशन, जयपुर, 1987

46. बिस्सा, कृष्ण कुमार : साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना, दिनमान प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984

47. डॉ. नागर, विमल शंकर : हिन्दी के आंचलिक उपन्यास : सामाजिक एवं साँस्कृतिक संदर्भ प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद, 1985

48. डॉ. पांडेय, इन्दु प्रकाश : उपन्यास : विद्या और सृजन साहित्य भारती, दिल्ली, 1996

49. डॉ. सरोदे, पीताम्बर : आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक एवं आर्थिक चेतना अतुल प्रकाशन, कानपुर, 1985

50. डॉ. बंदिवडेकर, चन्द्रकान्त : उपन्यास : स्थिति एवं गति वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

51. किशोर, नवल : हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवक्ता भारत प्रकाशन, दिल्ली, 1977

52. डॉ. कौशिक, हेमराज : मूल्य और हिन्दी उपन्यास निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, 2000

53. शर्मा, क्षमा, : स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002

54. डॉ. रांग्रा, रणवीर : हिन्दी उपन्यासों में चरित्र–चित्रण का विकास भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1976

55. गुप्त, मन्मथनाथ : समकालीन हिन्दी उपन्यास
अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1972

56. डॉ. सिंह, कुँवरपाल : हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना
पांडुलिपी प्रकाशन, दिल्ली, 1992

57. डॉ. उपाध्याय, मृत्युंजय : स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों का स्वरूप
अमर प्रकाशन, मथुरा, 2004

58. सिन्हा, सुरेश, : हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ
हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1994

59. डॉ. कुमारन विनय : समकालीन हिन्दी उपन्यास : समय और संवेदना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

60. मोहनन, एन : समकालीन हिन्दी उपन्यास
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

61. डॉ. सीलम, वेंकेटेश्वर : यशपाल के उपन्यास, समस्यामूलक अध्ययन, सीलम प्रकाशन, हैदराबाद, 1983

62. डॉ. मदान, इन्द्रनाथ : हिन्दी उपन्यास पहचान और परख
लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1993

63. डॉ. शर्मा, मोहिनी : हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य
साहित्यगार प्रकाशन, जयपुर, 1986

64. श्रीमती पंत, बसंती : हिन्दी उपन्यास : रचना विधान और युगबोध,
नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 1976

65. सिंह, ब्रजभूषण, : हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीतन
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970

66. डॉ. सिंह, लाल साहब : हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना
नमन प्रकाशन, दिल्ली, 1998

67. डॉ. साहनी, भीष्म : आधुनिक हिन्दी उपन्यास
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1980

68. मेघ, कुंतल रमेश : आधुनिकता बोध और अधुनिकीकरण
अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1969

69. श्रीमती दूबे, सरला भारत की सामाजिक समस्याएँ
प्रकाशन बुक डिपो, बरेली, 1979

70. कोहली, नरेन्द्र, : हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धान्त
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989

71. डॉ. साहब, लाल सिंह : स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में युगबोध
अभय प्रकाशन, कानपुर, 2005

72. डॉ. मिश्रा, प्रीति : हिन्दू महिलाओं के जीवन में धर्म का
महत्व, आदित्य पब्लिशर्स, दिल्ली, 2001

73. डॉ. पाण्डेय, दर्शन : नारी अस्मित की परख
संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004

74. डॉ. जागड़, गीता ए. : यशपाल के उपन्यासों में नारी पात्र
शर्मा पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2008

75. चौहान, देवीकिशन : समसामयिक नाटकों में वर्ग चेतना
स्वराज्य प्रकाशन, दिल्ली, 1997

76. रघुवंश, : आधुनिकता और सर्जनशीलता
मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली,
1980

77. डॉ. बोड़के : बबनराव, बीसवीं शताब्दी के अंतिम दर्शक
की कहानियों में नारी
विकास प्रकाशन, कानपुर, 2008

पत्र पत्रिकाएँ

क्र. सं.	पत्र/पत्रिकाएँ	संपादक	प्रकाशक
1	मधुमती (मासिक)	डॉ. प्रमोद भट्ट	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
2	हंस (मासिक)	संजय सहाय	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली,
3	कथादेश (मासिक)	हरिनारायण	सहयात्रा प्रकाशन, नई दिल्ली
4	नया ज्ञानोदय (मासिक)	अखिलेख जैन	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
5	पाखी (मासिक)	प्रेम भारद्वाज	इंडिपेंडेट मीडिया इनिशिएटिव सोसायटी, नोएडा, उत्तरप्रदेश
6	आधारशिला (मासिक)	दिवाकर भट्ट	संपादकीय कार्यालय,बड़ी मुखानी हल्द्वानी, उत्तराखंड
7	वागर्थ	विजय बहादुर सिंह	भारतीय भाषा परिषद, कोलकता
8	आलोचना (त्रैमासिक)	प्रो. नामवर सिंह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9	तद्भव	अखिलेश	लखनऊ, उत्तरप्रदेश
10	बहुवचन (त्रैमासिक)	अशोक मिश्र	महात्मा गाँधी अन्तराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
11	साक्षात्कार (मासिक)	उमेश कुमार सिंह	साहित्य अकादमी, भोपाल, मध्यप्रदेश
12	राजस्थान पत्रिका (दैनिक)	गुलाब कोठारी	पत्रिका समूह, जयपुर संस्करण
13	दैनिक भास्कर	मधु आचार्य	भास्कर समूह, जयपुर संस्करण
14	राजभाषा भारती (त्रैमासिक)	—	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, दिल्ली
15	कथा (द्वैमासिक)	मार्कण्डेय	इलाहाबाद, उ.प्र.
16	वसुधा (त्रैमासिक)	स्वयं प्रकाश	प्रगतिशील वसुधा, भोपाल, मध्यप्रदेश
17	आजकल (मासिक)	—	प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली
18	समावर्तन	रमेश देव	उज्जैन, मध्यप्रदेश

शब्द कोश – विश्व कोश

संपा. डॉ. हरदेव बिहारी	:	हिन्दी शब्द कोश राजपाल एंड संज, दिल्ली, 2011
संपा. धीरेन्द्र वर्मा	:	हिन्दी साहित्य कोश भाग–1, भाग–2 ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, 2005
डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त	:	हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश एटलांटिक पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 1995
वामन शिवराज आप्टे	:	संस्कृत हिन्दी कोश मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1967
पं. ईश्वरचन्द्र	:	परिजात कोश परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004
वृजेन्द्र चतुर्वेदी	:	हिन्दी वृहत कोश भाग 2 बुक्स एन बुक्स, दिल्ली, 2007
डॉ. रमाशंकर शुक्ल रसाल	:	भाषा शब्द कोश रामनारायण लाल बनीप्रसाद, इलाहाबाद, 1962
डॉ. भोलानाथ तिवारी	:	हिन्दी पर्याय कोश प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 1990
डॉ. बचुभाई, डॉ. रतिलाल	:	त्रिभाषा शब्द कोश गुर्जर ग्रंथ, अहमदाबाद, 2000
संपा. रामचन्द्र वर्मा	:	संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1971
डॉ. हरदेव बाहरी	:	मानक हिन्दी पर्यायकोश विद्या प्रकाशन मंदिर, 2000

डॉ. हरदेव बाहरी	:	राजपाल हिन्दी शब्दकोश राजपाल एंड संज, 2002
S.K. VERMA R.N. SAHAI	:	Oxford English - Hindi Dictionary Oxford University Press, 2003
Sir. Paul Harvey	:	Oxford Comparison to English Dictionary Oxford of the Claredon Press, 1946
Dr. B.S. Pandit	:	Amit Student Concert Dictionary Student Book Depot
William Little	:	The Short Oxford Dictionary The Standard Lit. Company, Colutta

अनिता मीणा
2/11/17
Signature of the Candidate with date

2/11/17
Name and Signature of supervisor with date & Seal
डॉ. रेणु वर्मा
व्याख्याता, हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय टोंक

....
....
....
....

APPENDIX - VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY,
AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of ~~Shri/Km.~~/Smt. ...ANITA MEENA..... on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ....07.......... (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is ....08.......... (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

2/11/17

Signature of the
Supervisor with date

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक [राज०]

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. ...ANITA MEENA for research work if he/she is registered for Ph.D.

2/11/17

प्राचार्य

Signature of the Principal/
Director of the Institution with date

2/11/17

Signature of the Head,
Department with date

व्याख्याता
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
टोंक [राज०]